प्रश्न :- पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, अर्द्धप्रामाणिकता एवं अप्रामाणिकता के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के मत प्रस्तुत करते हुए अपना मत व्यक्त कीजिए ?

उत्तर :- पृथ्वीराज रासो आदिकाल का प्रमुख महाकाव्य है, जिसकी रचना दिल्ली के चौहान राजा पृथ्वीराज के अभिन्न मित्र एवं दरबारी कवि चंदबरदाई द्वारा की गई है। यह 2500 पृष्ठों का एक विशालकाय ग्रन्थ है, जिसमें कुल 69 समय (सर्ग) हैं। रासो का चरित नायक हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान है, जिसके क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य है।

पृथ्वीराज रासो का चरित नायक पृथ्वीराज ऐतिहासिक व्यक्ति है, अत: उसके जीवन से संबंधित वृत्तांत इतिहास में भी उपलब्ध होता है। रासो में दिए गए विवरण इतिहास से मेल नहीं खाते। अत: इस ग्रंथ की प्रामाणिकता में संदेह उत्पन्न होता है। विद्वानों ने रासो की प्रामाणिकता, अर्धप्रामाणिकता एवं अप्रामाणिकता के सम्बन्ध में अलग-अलग मत प्रस्तुत किये हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि साहित्य की दृष्टि से रासो एक अमूल्य निधि है, किन्तु आलोचकों का ध्यान इसमें वर्णित उन घटनाओं पर भी गया है, जो इतिहाससम्मत नहीं हैं। इस प्रकार रासो की प्रामाणिकता वस्तुत: एक विवादास्पद प्रश्न है। इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व हमें रासो के विभिन्न रूपांतरों के विषय में भी जान लेना चाहिए। अब तक पृथ्वीराज रासो की जो विभिन्न प्राचीन प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं, वे भी एक समान नहीं हैं। कोई प्रति तो अत्यंत वृहदाकार है तो कोई अति संक्षिप्त। इन सभी प्रतियों को हम चार वर्गों में विभक्त कर सकते हैं।

(I) वृहद् रूपांतर :-

इसका प्रकाशन नागरी प्रचारिणी

सभा काशी से हुआ है तथा इसकी हस्तलिखित प्रति उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है। इस रूपांतर में 69 समय तथा 16306 छंद हैं।

(2) मध्यम रूपान्तर :-

इसका प्रकाशन नहीं हुआ है किन्तु इसकी प्रतियाँ अबोहर एवं बीकानेर के पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। इस रूपान्तर में समयों की संख्या 50 और 70 के बीच है तथा छंद संख्या 7000 है।

(3) लघु रूपांतर :-

इस संस्करण की प्रतियाँ भी बीकानेर पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। इसमें 19 समय हैं तथा छंद संख्या 3500 है।

(4) लघुत्तम रूपांतर :-

इसका प्रकाशन 'राजस्थान भारती' नामक पत्रिका में हुआ है। इस रूपांतर में समयों का विभाजन नहीं है तथा छंद संख्या 1300 है। डॉ० दशरथ शर्मा इसी को मूल पृथ्वीराज रासो मानते हैं।

कर्नल टाड ने पृथ्वीराज रासो को प्रामाणिक मानते हुए बंगाल एशियाटिक सोसायटी से इसका प्रकाशन प्रारम्भ करवाया, परन्तु डॉ० बूलर ने कश्मीर के राजकवि जयानक द्वारा संस्कृत में रचित 'पृथ्वीराज विजय' नामक ग्रन्थ की खण्डित प्रति के आधार पर रासो को अप्रामाणिक घोषित कर इसका प्रकाशन स्थगित करवा दिया। रासो की प्रामाणिकता पर संदेह व्यक्त करने वाले सर्वप्रथम विद्वान् उदयपुर के कविराज श्यामलदास थे, बाद में गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने भी इसकी अप्रामाणिकता के सम्बन्ध में अकाट्य तर्क प्रस्तुत किए।

कालांतर में कुछ अन्य विद्वानों जैसे - कर्नल टाड, डॉ० श्यामसुन्दरदास, मिश्रबंधु, मोतीलाल मेनारिया आदि ने रासो को प्रामाणिक कृति मानते हुए अपने तर्क दिए। इस प्रकार रासो की प्रामाणिकता का प्रश्न विवादास्पद बन गया।

(शेष बचा है)

पता!
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० नं० - 7909046087
दिनांक - 23.02.2022